नोटबंदी

आज देश का हर एक नागरिक नोटबन्दी के प्रभाव में है

हर कोई अपनी तरह से व्याख्या कर रहा है यदपि कैश के अभाव में है

हमारे कवी मन ने सोचा क्यों ना हम भी दिमाग दौड़ाएं

कुछ तो अक्ल हममे भी है क्यों ना दुनिया को बतलायें

बंदी शब्द का जिक्र पहली बार जीवन में तब आया था

जब कक्षा दो में टीचर ने एक रचना का कविता पाठ कराया था

.......यदि होता किन्नर नरेश मैं राजमहल में रहता

........बंदीजन गुण गाते रहते दरवाजे पर मेरे

.........प्रतिदिन नौबत बजती रहती संध्या और सवेरे

टीचर ने पढ़ाया रटाया, हमने दोहराया

किन्तु कोई विशेष प्रभाव बंदी शब्द नहीं छोड़ पाया

जैसे कुछ सोच विकसित हुई

चकबंदी की बात सुनने में आयी

वैसे तो हमारे जन्म से पहले की घटना है

पर बुजुर्गो को वार्तालाप में अब भी खूब भायी

किसानों के छोटे छोटे खेत सरकार ले लेती

और बदले में किसी एक जगह पर बड़ा सा खेत दे देती

बड़ा सा यहाँ खेत चक कहाता था

और इस प्रक्रिया को चकबंदी कहा जाता था

चकबंदी शब्द खूब प्रचलित हुआ, वार्तालाप में खूब चला

सरकार भी खुश और किसान का भी भला

सत्तर के दशक में एक और बंदी यानी नसबंदी शब्द आया

इसने स्त्रियों को छोड़ दिया सिर्फ पुरुषों पर करम ढाया

बालमन को यह प्रक्रिया समझ नहीं आती थी

वयस्को की भाषा में इसकी चर्चा की जाती थी

सरकार ने बाधा खड़ी की थी उन बच्चों के आने में

जो इस दुनिया में आना चाहते थे

पढ़लिख कर देश और माँ बाप दोनों का नाम रोशन करना चाहते थे

कुछ बापों ने भी सरकार साथ दिया

जीवन की नदी पर बाँध बना दिया

आपूर्ति विशेष को रोककर बच्चों के आने का रास्ता समाप्त किया

इतिहास का सबसे क्रूर और स्वार्थी आंदोलन इसे कहा जाएगा

किसी को इसलिए दुनिया में आने से रोक दिया कि वो हमारे संसाधन खा जाएगा

पुरुष पैरो से चलकर हॉस्पिटल तक जाता था

और अपौरुष होकर खटिया पड़कर वापस आता था

उस समय पर भी असमंजस व्याप्त था

विपक्ष का विरोध था फिर भी सरकार को कुछ समर्थन प्राप्त था

चलो अब नोटबंदी का विश्लेषण कर लेते हैं

सामयिक विषय है इसका ध्यान धर लेते हैं

नोटबंदी शब्द में ही बहुत बड़ा विरोधाभास है

धन काला और गोरा हो सकता है किसको विश्वास है

सारा धन एक ही टकसाल से छापकर आता है

इसका रंग कब और कैसे बदल जाता है

काला धन छुपाकर अँधेरे में रखा जाता है

सफ़ेद धन सबको सूरज की रोशनी में नजर आता है

विज्ञान इस माजरे को नहीं समझ पाता है

सूरज की चमक से नोट टैन होकर काला होना चाहिए

और अँधेरे में रखे धन को गोरा होना चाहिए

आपके समझ आये तो सरकार को जरूर बताइये

खैर मोदीजी पर जनता को विश्वास है

कुछ अच्छा ही कर रहे होंगे ऐसी देशवासियों को आस है

बात बंदी की हो तो कमरबंद जैसा शब्द भी जहन में आया

अचम्भे की बात है की कमरबंदी जैसा कोई आंदोलन नहीं बन पाया

नज़रबंद एवं डिब्बाबंद जैसे शब्द भी भाषा मी चलते रहते हैं

ना तो किसी को इनसे आपत्ति हैं ना ही ये किसी को कुछ कहते हैं

भारतबंद एक ऐसा नारा है जो साल में कामे से काम दो बार सर उठाता है

समझ से परे की बात है कि भारत बंद करने वालों को भारतबंदी क्यों नहीं कहा जाता है

इतनी सारी बंदी अनुभव कर लेने के बाद क्या मोदी सरकार एक और बंदी लाएगी

जो अंग्रेजी में वाइफबंदी और हिंदी में त्रियाबंदी कहलाएगी

यह स्कीम सिर्फ पुरुषों के लिए होगी जिसमे पुरानी पत्नी नयी से बदल दी जायेगी

ATM की कतार में लग जाइये

पुराने नोट जैसी बीबी जमा कराइये

और बिलकुल नए दो हजार के नोट जैसी

गुलाबी बीबी ले जाइये

भारत का पुरुष वर्ग सरकार का आभारी रहेगा

दस दिन ATM की लाइन में भूख प्यासा खड़ा रहकर भी चूं नहीं कहेगा

UP चुनाव से पहले ये स्कीम ले आओ

रंग गुलाबी ही रखो, बोरा भरकर वोट ले जाओ